Parvatibai Chowgule College of Arts and Science
Autonomous
B.A. Semester End Examination, January 2022

Semester- III
Subject- Hindi
Title- मध्यकालीन काव्य (चयनित कविताएँ) (ELECTIVE-2)
Duration- 2hr
Max.marks- 40

सूचना- 1. सभी प्रश्न अनिर्वाय हैं।
2. सभी प्रश्नों के समान गुण हैं।

प्र.1. निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं दो</u> के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए। (10)

1. कबीरदास जी मूर्ख को लोहे के समान क्यों कहता है?
2. राम और सीता पुष्प वाटिका क्यों गए थे?
3. गोपियों की विरह दशा का वर्णन कीजिए।
4. हिरामन ने पद्मावती के रूप का वर्णन किस प्रकार से किया है?

प्र.2. निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं दो</u> के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए। (10)

1. "मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोई। जा तन की झांई परै स्याम हरित दुति होई॥" इस दोहे के अर्थ को स्पष्ट किजिए।
2. मीराबाई भगवान श्रीकृष्ण को पति के रूप में क्यों स्वीकार करती है?
3. रसखान प्रत्येक जन्म में ब्रज की धरती पर जन्म क्यों लेना चाहते हैं?
4. घनानंद को 'प्रेम की पीर' का कवि क्यों कहा जाता है?

प्र.3.अ) 'मीराबाई कृष्ण प्रेम के लिए परिवार एवं समाज की परवाह नहीं करती', कथन को स्पष्ट कीजिए। **(10)**

अथवा

आ) कबीरदास जी के पदों की प्रासंगिकता को जीवन प्रसंगों के माध्यम से समझाइए।

P.T.O.

प्र.4. निम्नलिखित पदों में से <u>किन्हीं दो</u> पदों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। (10)

1. मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
   ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी॥
   भावतो वोहि मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वांग करौंगी।
   या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

2. ऊधौ मन न भये दस बीस।।
   एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस ॥
   इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
   आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस ॥
   तुम तौ सखा स्याम सुन्दर के, सकल जोग के ईस।।
   सूर हमारै नंदनंदन बिनु, और नहीं जगदीस ।।

3. कारी कूर कोकिला कहाँ को बैर काढ़ति री,
   कूकि-कूकि अब ही करेजो किन कोरि लै।
   पैडें परे पापी ये कलापी नस द्यीस ज्यौं ही,
   चातक घातक त्यौं हो तू हू कान फोरि लै।
   आनंद के घन प्रान-जीवन सुजान बिना,
   जानि कै अकेली सब घेरी दल जोरि लै।
   जौ लौं करै आवन विनोद-बरसावन वे,
   तो लौं रे डरारे बजमारे घन घोरि लै॥

4. पायोजी म्हें तो राम रतन धन पायो।
   बसतु अमोलक दी म्हारे सतगुरू, किरपा कर अपणायो॥
   जनम-जनम री पूँजी पाई, जग में सो खोवायो।
   खरच नहीं खूटे चोर न लूटे, दिन-दिन बढ़त सवायो॥
   संत री नाँव खेवटिया सतगुरू, भव सागर तर आयो।
   'मीरा' री प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस पायो॥

****